प्रेमचन्द के उपन्यासो में नारी चित्रण

डॉ. सीताराम मीना
व्याख्याता –हिन्दी
स्व. राजेष पायलट राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय,
बांदीकुई (दौसा)

रेखांकित शब्दः–स्रष्टा, परिणीता, समावर्णन, अंतविरोध, षिद्दत, मोहपाष, गुरेज, जद्दोजहद, कुलटा, दुश्यारियां, स्वत्व–वंचिता, वैधव्य, हुकुमत।

सारांषः–

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी के कई रूपो को दिखाया। भूतकाल और वर्तमान काल की मुष्किल परिस्थितियों के साथ–साथ उन्होने भविष्य को भी काफी आगे तक देखा है। उनके नारी पात्र विमर्ष का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते है। उनके युग में नारी कई अधिकारों से वंचित थी। ये वो दौर था, जब शारीरिक सुंदरता, निर्बलता और उनके देवीय गुणों का महिमा मंडन कर स्त्री को घर के अन्दर, कैद कर दिया गया। परिवार पर पुरूषों ने अपना वर्चस्व कायम रखा। स्त्रियों को परावलंबी और मूकदर्षिका बना दिया। ऐसे में उनकी स्थिति गिरते–गिरते गुलाम जैसी हो गई। आर्थिक निर्भरता ने उनसे पारिवारिक निर्णय लेने का अधिकार छीन लिया। जहॉ देवी पूजिता होनी चाहिये थी वहॉ नारी, शोषित, अपमानित बना दी गई। इस स्थिति को सुधारने के लिये प्रेमचन्द ने साहित्य का सहारा लिया। प्रेमचन्द के उपन्यासो में स्त्री विमर्ष की स्थिति काफी मजबूत है। युग–द्रष्टा और युग स्रष्टा प्रेमचन्द ने स्त्री को पुरूष से ऊपर माना है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र महज कल्पना नही है, बल्कि तत्कालीन युग की जीती –जागती तस्वीर है। उनके उपन्यासो की नारी पात्रों ने बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा तथा आदि कई समस्याओ को झेला हैं, जिया है विरोध के स्वर मुखर किये है। अनमोल विवाह में स्त्रियो का अपमानित होना, नौकरानियों से निम्नत्तर व्यवहार यहॉ तक की समाज में बेटियॉ बोझ मानी गई। इन सब कुरूतियो को प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में दिखाया है। इन कुरूतियो को दूर करने के लिये उन्हें नारी का आत्मनिर्भर होना स्वीकार है। उनके उपन्यासों में महिला पात्र, माता, विधवा, प्रेमिका, परिणीता, मेहनतकष, समाज सेविका जैसे कई रूपो में अमिट छाप छोडती है।

''आज हिन्दुस्तान नारी को क्रान्तिकारी बनाने के लिये जिस सषक्त दौर से गुजर रहा है और जिस स्त्री विमर्ष की बातें जोर–षोर से हर मंच पर उठायी जाती है उसे प्रेमचन्द बहुत पहले ही सषक्त साबित कर चुके है। प्रेमचन्द के साहित्य की नारी महज नारी नहीं है। वह इस भौतिक जगत से कहीं ऊपर उठकर शक्ति का रूप धारण कर लेती है। जिसके समावर्णन को पढ़कर ऐसा लगता है कि मानो समाज में उसने ही संतुलन कायम रखा है।'' 1

प्रस्तावना :–

प्रेमचन्द और उनका साहित्य हमारी संस्कृति की धरोहर है। प्रेमचन्द ने अपनी लेखनी में बडी ही सूक्ष्म दृष्टि नारी की व्यथा पर केन्द्रित की है। इस शोध में प्रेमचन्द द्वारा लिखित हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्ष पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह एक अनुसंधानमूलक आलेख है। इसमें प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री चित्रण के साथ–साथ हिन्दी साहित्य में स्त्री–विमर्ष के आगमन पर एक संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण का उल्लेख किया गया है। हिन्दी साहित्य में स्त्रियों के महत्व का भी उल्लेख है। स्त्री विमर्ष चिन्तम का वह स्वर है जो रूढ़ होती मान्यताओ के खिलाफ आवाज उठाता है। यह रूढिवादी मान्यताओं में जकड़ी स्त्रियों का समवेत स्वर है। हमारे पुरूष प्रधान समाज में बरसों से पुरूष की हुकुमत रही है। जिसकी वजह से पितृसतात्मक समाज का मापदंड दोहरा रहा है। उनके मूल्यों और अवधारणाओं में भी विरोधाभास है। यह आलेख उनके अंतविरोधो को सामने लाता है। साथ ही इस विषय पर विष्व चिंतन को एक ऐसा मुद्दा देता है जो सर्वथा उपेक्षित रहा है। स्त्रियों को लंबे समय तक अनेक अधिकारों से वंचित रखा गया है। ऐसे

में यह पितृसत्तात्मक परिवार पर सवाल खड़े करता है। आखिर क्यों स्त्रियो को संस्कारो के नाम पर जकड़ा गया? आखिर क्यों वे अपने खिलाफ हो रहे अन्यायो के विरोध में आवाज नहीं उठा पाई? क्यो उन्हें एक ऐसे सांचे में ढाल दिया गया, जहॉ वे सजीव होकर भी निर्जीव और मूकदर्षक बनी रही। परिवार संस्था का सबसे मजबूत स्तम्भ होने के बाद भी उन्हें सबसे कमजोर आंका गया। मर्यादा के बंधनो में बांधकर अनुषासित और नियन्त्रित जीवन जीना ही उसका ध्येय बना दिया गया। निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं दिया गया। महज कर्तव्यों का पालन करने वाली मूकदर्षिका बना दिया गया। लेकिन अब स्त्रियॉ अपने दयनीय जीवन पर सवाल–जवाब करने लगी है। अपने अधिकारो और कर्तव्यो की बात करने लगी है। अपने अस्तित्व को प्रबल रूप से सामने रखने लगी है। तब पितृसतात्मक समाज में सवाल उठने लगे। सिमोन द बोउअर के अनुसार ''स्त्री पुरूष प्रधान समाज की कृति है। अपनी सत्ता को बनाये रखने के लिये पुरूष उसे जन्म से ही अनेक नियमों के सांचे में ढालता चला गया। जहॉ उसका व्यक्तित्व दबता चला जाता है।''2 प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में स्त्रियों द्वारा न सिर्फ स्त्रियों की वास्तविक स्थिति पर सवाल उठाया बल्कि उसका समाधान भी मुहैया करवाया। हालांकि स्त्रियो की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिये कई प्रयास हुये है। जिसमें पुरूषो का एक वर्ग भी है जो सामने आया है। लेकिन अभी और भी प्रयास की आवष्यकता है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्ष की स्थिति काफी कुछ महत्वपूर्ण है।

प्रेमचन्द के उपन्यासो में स्त्री चित्रण

उपन्यासो ने सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार प्रेमचन्द और उनके साहित्य सृजन में स्त्रियों को अलग ही मुकाम दिया है। उन्होने बडी षिद्दत से समाज की समस्याऐं उजागर की है। उनकी कलम में नारी को कमजोर अबला नहीं बनाया बल्कि सबल और सषक्त बनाया है।

''बडा आष्चर्य होता है कि जिस कोख में पुरूषों को जन्म दिया, उस नारी को पुरूषो ने कैसे अबला बना दिया। जो जन्म के लिये भी स्त्री की कोख के लिये मोहताज है, उन्होने उस स्त्री को सर्वथा महत्वहीन बना दिया।'' 3

प्रेमचन्द की लेखनी में स्त्रियॉ पारिवारिक और राजनैतिक दोनों ही क्षेत्रों में सषक्त किरदार अदा करती है। प्रेमचन्द स्त्रियों को चारदीवारी में कैद नहीं करते, उन्हे घर से बाहर भी निकालते है और चारदीवारी के अन्दर भी उनकी महत्ता को स्थापित करते है। कर्मभूमि उनके सबसे प्रसिद्ध उपन्यासों में एक है। कर्मभूमि भारत की राजनीतिक स्थिति पर लिखा गया उपन्यास है। जिसने लोकप्रियता के नये आयाम गढ़े। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने भारत में अंग्रेजी शासन के विरोध मे पुरूषो के साथ–साथ महिला को भी खडा किया है। उन्होने नारी को केवल कोमलांगी और सौन्दर्य की प्रतिभूति नहीं माना है अपितु उसे कर्मठ और पुरूषो के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाली संघर्षषील महिला का स्थान दिया है। उपन्यास की स्त्री पात्र सुखदा, सुख–सुविधाओं से पली हुई सभ्य सुषिक्षित महिला है लेकिन वह इन गुणों से अपने पति को मोहपाष में नहीं बांध पाती, जबकि साधारण सूरत वाली कर्मठ नारी नायक अमरकांत को प्रभावित करती है और जब सुखदा अपनी इस दिनचर्या को छोड़ सामान्य स्त्री बन जाती है तो वह आत्मषक्ति से परिपूर्ण व्यक्तित्व के साथ उभरती है। जो समाज कल्याण के लिये जेल जाने से भी गुरेज नहीं करती और इसमें स्वयं को झोकने वाली प्रभावषाली व्यक्तित्व बन जाती है। सुखदा का घर परिवार की जिम्मेदारियों को निभाना, पति का साथ ना होते हुये भी बाहर नौकरी करना, लोकहित में कार्य करना, स्वतन्त्रता आन्दोलन में पुरूषो के साथ जेल जाना स्त्री के चारित्रिक विषेषता का सषक्त उदाहरण है। राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रेमचन्द युगीन नारियो की दखल थी। गबन की जालपा और रंगभूमि की सोफिया अपनी वैचारिक दृढता की कहानी स्वयं कहती है। गबन में जालपा एक ओर अपने पति पर सब कुछ न्योछावर करने वाली पत्नी का किरदार निभाती है तो दूसरी ओर उसका क्रान्तिकारी रूप देखकर आष्चर्य होता है। जालपा सबल चरित्र का अनुपम उदाहरण है जो बिना झगड़े तत्परता और बहादुरी से जिन्दगी की जद्दोजहद से जूझती है। वह अपनी समझ से रास्ता चुनती है। रीति–रिवाज और रूढिवादी संस्कारो को नकारते हुये ज्ञान के उद्यात्त रूप को अपनाती है। गबन के पैसे से मिला चन्द्रहार उसे स्वीकार नहीं लेकिन पति का साथ भी कभी नहीं छोडती है। जालपा का यह रूप सहज ही बता रहा है कि प्रेमचन्द की दृष्टि में स्त्रियॉ कितनी सषक्त है। रंगभूमि की

सोफिया का किरदार प्रेमचन्द ने काफी दबंग रखा है। रंगभूमि में तत्कालीन सम्पूर्ण भारत के जनमानस की व्यधा–कथा को चित्रित किया गया है। यह कालजयी कृतियो में गिनी जाती है। जिसमें नौकरषाही के साथ–साथ पूॅजीवाद एवं जनसंघर्ष के ताडंव तथा सत्य अंहिसा के प्रति आग्रह को चित्रित किया गया है। ग्रामीण जीवन में उपस्थित मद्यपान तथा दुर्दषा का भयावह चित्रण है। मुंषीजी ने इस उपन्यास में देष की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को आधार बनाया है, जिसमें सोफिया एक ऐसी नारी है जो राजनीति में बढ–चढ़कर हिस्सा लेती है। प्रेमचन्द की यह नारी पात्र बहुत ही खूबसूरत है जो धर्म पर विष्वास करती है।

लेकिन धार्मिक अंधविष्वासों को नकार देती है। वह धर्म, त्याग और सद् विचार का अवतार है जो प्रमुखता से अपने विचार रखती है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासो में सामाजिक विषयवस्तु को उभारा है। जिसमें नारियों को अहम किरदार दिये गये है। राजनीतिक क्षेत्र के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्र में उनकी नायिकाओं ने अपनी छाप छोडी है। संघर्षरत और मेहनतकष नारियॉ उनके उपन्यास की जान है।

''जब पुरूष में नारी के गुण आ जाते है तो वो महात्मा बन जाता है लेकिन यदि नारी में यह गुण आ जाये तो वो कुलटा बन जाती है।'' 4

गोदान में उद्धत ये पक्तियॉ प्रेमचन्द का नारी को देखने का सम्पूर्ण नजरिया प्रस्तुत करती है। गोदान की धनिया सषक्त इरादे की निडर और धैर्यवान महिला है। जो यथासंभव और स्थितिवष विरोध और विद्रोह करती है। दूसरी नारी पात्र झुनिया सामाजिक नियमों को चुनौती देती है, प्यार के बाद शादी का फैसला करती है। वह इतनी मजबूत है कि खुद सास–ससुर से अपनी शादी की बात करती है। यहॉ पर पुरूषो से ज्यादा हिम्मती और मजबूत है। वह ताडी पीकर आये गोबर से मार भी खाती है वह भी तब, जब वह गर्भावस्था में थी फिर भी हड़ताल में घायल हुये गोबर की जी–जान से सेवा भी करती है। गोदान का यह किरदार सामाजिक भी है और मर्यादित भी।

जहॉ एक ओर आदर्षवादिता को ओढे ग्राम्य समाज किसान वर्ग लड़ते–लड़ते ही मर जाता है वहॉ उसकी औरते रोते–कलपतें जिन्दगी की दुष्यारियो से समझौता करते–करते सारी जिन्दगी काट देती है। वो इन दुष्यारियो को अपनी किस्मत मानकर हर हाल में संतोष से रह लेती है। प्रेमचन्द इस उपन्यास के अंतिम दृष्य में अपनी लेखनी से साक्षात सच्चाई प्रस्तुत कर देते है। ''महाराज घर ना गाय है ना बछिया ना पैसा, यही पैसा है। यहीं इनका गोदान है और पछाड खाकर गिर पडती है।'' 5

किसान वर्ग के तकलीफ का यह चित्रण मार्मिक दृष्य पैदा कर देता है। पढ़ने वालो को उनकी पीडा का गहन अनुभव होता है। इस कथा में धनिया एक गरीब किसान की पत्नी है जो परिवार की खुषी के लिये जी–जान से लगी रहती है। धनिया सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर अपनी सषक्त छाप छोडती है। सेवासदन की नारी पात्र सुमन सामाजिक विडम्बना और आडम्बरों को तोडकर नारी स्वाधीनता की शुरूआत करती है। सुमन एक ऐसा चरित्र है जो बेमेल विवाह और दहेज प्रताडना की षिकार है। उसका चरित्र आदर्षवाद से ज्यादा यथार्थवाद के रूप में पाठकों के सामने जाता है। सामाजिक और पारिवारिक विसंगति की षिकार सुमन पति का प्रताडना से परेषान होकर घर छोड देती है। कहानी में तमाम विपरीत परिस्थितियो से जूझते हुये भी अपनी सषक्त छाप छोड जाती है।

प्रेमचन्द युगीन समाज में नारी पूर्णतया पुरूषों के अधीन थी। यह वह काल था जब पति की मृत्यु हो जाने पर नारी का अस्तित्व नकार दिया जाता था। उसे जायदाद से बेदखल कर दिया जाता था। उस दौर में विधवा होते ही स्त्री अपने अधिकारो से भी वंचित हो जाती थी। विधवा समस्या को मुंषी जी ने अपने कई उपन्यासो में प्रमुखता से उठाया है। गबन में विधवा रतन कहती है। ''ना जाने किस पापी ने यह कानून बनाया है कि पति के मरते ही हिन्दू नारी इस प्रकार स्वत्व–वंचिता हो जाती है।'' 6

वैधत्व के कई उदाहरण उनके उपन्यास में है। जिसके चलते नारी आश्रयविहीन हो जाती है। आर्थिक मामलों से वंचित होकर निराश्रय जीवन जीती है। जिसकी वजह से उन्हें अपनी अनेक इच्छाओ को मारना पडता है। वरदान में बृजरानी विधवा है लेकिन प्रेम के लिये तरसते मन को प्रताप से प्यार हो जाता है। लेकिन वह प्रताप से विवाह नहीं कर सकती। प्रतिज्ञा में पूर्णा सौन्दर्य की मूति होते हुये भी वैधव्य को नसीब समझकर कृष्ण की भक्ति में लीन हो जाती है। पति की मृत्यु के बाद धर्मावलम्बियो और पोंगा पण्डितो द्वारा औरत की अस्मिता से खेले जाने का दुखद चित्रण है। गायत्री रासलीला में फंसकर रह जाती है। वह धुनिया और स्वामिनी अपने मनमुताबिक विवाह कर सन्तुष्ठ जीवन जीती है। प्रतिज्ञा में पुर्नविवाह का तारतम्य रचकर भी किसी पात्र द्वारा प्रेमचन्द ऐसा संभव नही करा पाये। पूर्णा को वनिता आश्रम भेज दिया जाता है। जाहिर है प्रेमचन्द यह फैसला समाज पर छोड़ना चाहते थे। उनके उपन्यासो में कल्याणी, रतन, रेणुका देवी ऐसी विधवाऐं है जिन्हे वैधव्य से षिकायत नहीं है। विरंजन (वारदान), गायत्री (प्रेमाश्रय), बागेष्वरी (कायाकल्प), कल्याणी (निर्मला), रतन (गबन) और रेणुका देवी (कर्मभूमि) ऐसी स्त्री पात्र है जिन्होने विधवा जीवन स्वीकार करते हुये उन्हें जिया और मर्यादा का पालन किया।

आर्थिक निर्भरता ने स्त्रियों को समाज में गुलाम बना दिया। वे अपनी छोटी–छोटी जरूरतो के लिये भी मोहताज बनी रही। मंगलसूत्र में प्रेमचन्द ने नारी की इस व्यथा को दिखाया है। नायक संतकुमार अपनी पत्नी से कहते है कि ''जो स्त्री पुरूष पर अवलंबित हो उसे पुरूष की हुकुमत माननी पडेगी। जिस पर नारी पात्र का जवाब है कि अगर मैं तुम्हारी आश्रिता हूँ तो तुम भी मेरे आश्रित हो। मैं जितना काम तुम्हारे घर में करती हूँ उतना अगर किसी दूसरे के घर में करूँ तो अपना निर्वाह कर सकती हूँ। तब जो कमाउँगी वो मेरा होगा, बोलो। मैं चाहे प्राण दे दूँ मेरा किसी चीज पर अधिकार नहीं। तुम जब चाहो मुझे निकाल सकते हो'' 7 यह संवाद नारी की स्थिति और उसका विरोध बयान करती है।

अपनी रचनाओ में प्रेमचन्द ने सर्वथा स्त्री के आर्थिक स्वतन्त्रता एवं विकास के पक्षधर रहे है। लेकिन उन्होने भारतीय मूल्यो को कभी भी नहीं नकारा है। वे पष्चिम सम्यता के अनुकरण को नकारते थे। पाष्चात्य देषो की स्वच्छन्दता उन्हें रास नहीं आती थी। पाष्चात्य संस्कृति के अनुकरण की जो भावना भारत के कुछ उच्च षिक्षित नारियों में आ रही थी। प्रेमचन्द उसे चिन्ता का विषय मानते थे। भारतीयता उनके दिल में बसती थी। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने स्त्री विमर्ष पर खुलकर और जोरदार कलम चलाई है। उन्होने स्त्री को पुरूष की साथी माना है जो तत्कालीन समाज में भी प्रासंगिक है। कायाकल्प में नायक की स्त्री पूछती है '' नारी के लिये पुरूष सेवा से बढ़कर और विलाप, भोग या श्रृंगार नहीं है परन्तु कौन कहता है कि नारी का यह त्याग उसकी सेवाभाव ही आज उसके अपमान का कारण नहीं हो रहा है ?'' अपने उपन्यासों में प्रेमचन्द ने स्त्रियो के आर्थिक स्वतन्त्रता के रास्तो को सुगम किया है। प्रेमचन्द ने आदर्षवाद का साथ भी कभी नहीं छोडा। वे पात्रो के चरित्र–चित्रण में आदर्षवाद को अहम मानते हुये तत्कालीन परिस्थिति को रखते थे।

प्रेमचन्द का मानना था कि सामाजिक नियम स्त्री और पुरूष दोनों के लिये समान है। किसी भी कार्य के लिये यदि सहभागिता समान है तो परिणाम मे भी बराबर की हिस्सेदारी होनी चाहिये। पुरूष सच्चरित देवता बन जाये और स्त्री कलंकनी, ऐसा नहीं हो सकता। सच्चा प्रेम गलत राह पर चल पडी स्त्री में भी सुधार ला सकता है। इस मनोवैज्ञानिक स्थिति को मुंषी जी अपने पात्रों के माध्यम से सामने लेकर आए। गबन की वेष्या जोहरा और गोदान की तितलीनुमा सोसायटी लेडी मिस मालती ऐसी ही स्त्रियॉं है। वेष्यावृति पर उनकी भावनाऐं कोमल रही है। उनकी अवधारणा थी कि वेष्यावृति को अपनाने वाली महिलायें समाज से ठुकराई गई है। मजबूरी में ही कोई भी स्त्री ये पेषा अपनाती है। सेवासदन इसका स्पष्ट उदाहरण है। 'सेवासदन' में सुमन दहेज और पति द्वारा प्रताड़ित होने के बाद अपने आप को वेष्यावृति की आग में झोंक देती है। 'सेवासदन' में बैंक के बाबू और समाज सुधारक विट्टलदास में वेष्यावृति अपनाने की बात पर कहती है ''मैं जानती हूँ कि मैनें अत्यन्त निकृष्ट काम किया है, लेकिन मैं विवष थी। इसके सिवाय मेरे लिये कोई रास्ता ना था। मेरे मन में बस यही चिंता रहती है कि आदर कैसे मिले'' 8 यहॉं प्रेमचन्द यह तथ्य उजागर करते है कि निम्न कार्य करने वाला भी आदर चाहता है। स्त्रियो को भी सम्मान मिलना चाहिये।

निर्मला वह किरदार है जिसमें बेमेल विवाह और दहेज दोनो को झेला निर्मला में 15 साल की बालिका निर्मला का विवाह 45 साल के तोताराम से हो जाता है। विषम परिस्थितियो और मानसिक द्वंद को झेलते–झेलते निर्मला अपनी जिन्दगी बिता देती है। यहॉ अयोग्य वर होते हुये भी खानदान के नाम पर निर्मला की शादी कर दी जाती है मानो खानदान का अच्छा होना ही सबकुछ है। वर की योग्यता मायने नहीं रखती। सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों के लिये वह खोखले आदर्षो को निभाती चली जाती है।

संदर्भ सूची –

1. उपन्यासकार प्रेमचन्द, लेख प्रेमचन्द, और उनकी नायिकाऍं, डॉ. सुरेष सिन्हा
2. सिमोन, बी (1949), द सेकेंड सेक्स, फ्रांस।
3. दास. आर (2016), अनभाई. कम।
4. प्रेमचन्द, गोदान (1936), गोदान इलाहाबाद : हंस प्रकाषन।
5. गबन, गोदान इलाहाबाद : हंस प्रकाषन।
6. मंगलसूत्र अप्रकाषित, इलाहाबाद, हंस प्रकाषन।
7. गोयनका, के.के.1962, प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड तीन) नई दिल्ली, साहित्य अकादमी।
8. खेतान.पी. (1990), स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पॉकेट बुक्स।